लोबिया की विधि पूर्वक खेती से छोटे और सीमांत किसानों की आय में वृद्धि

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 74–77

लोबिया की विधि पूर्वक खेती से छोटे और सीमांत किसानों की आय में वृद्धि

धर्मेंद्र बहादुर सिंह[1] एवं अखिल कुमार चौधरी[2]
[1,2]शोध छात्र, सब्जी विज्ञान विभाग, उद्यान महाविद्यालय,
[1]चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश।
[2]आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।
Email Id: ds3509280@gmail.com

भारत में छोटे और सीमांत किसानों की संख्या बहुत अधिक है, जिनके पास बेहद कम जमीन है। ऐसे किसानों के लिए लोबिया की खेती फायदेमंद हो सकती है। लोबिया एक दलहनी फसल की श्रेणी में आने वाली एक फसल है। इसकी खेती खरीफ और जायद, दोनों सीजन में होती है। इसकी खेती करने से किसानों को दो प्रकार के लाभ हो सकते हैं, एक तो किसान इसे सब्जी के रूप में उपयोग कर सकते हैं और दूसरा इसे पशुओं के चारे में उपयोग किया जा सकता है।

लोबिया में मौजूद पौषक तत्व

लोबिया में मौजूद प्रोटीन, वसा, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, कैरोटीन, थायमीन, राइबोफ्लेविन, नियासीन, फाइबर, एंटीऑक्सीडेन्ट, विटामिन बी 2 और विटामिन सी जैसे कई पोषक भी तत्व पाए जाते हैं जो कि स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। लोबिया का सेवन अलग–अलग स्वास्थ्य स्थितियों जैसे – वजन कम करने में, पाचन, दिल को स्वस्थ रखे में, शरीर को डिटॉक्स, सर्कुलेटरी हेल्थ में सुधार, नींद से जुड़ी समस्याओं से राहत, स्किन केयर, डायबिटीज को मैनेज आदि स्वास्थ्य स्थितियों के अनुसार फायदेमंद हैं। इस फायदों को आप इसे डाइट में कई तरीकों से शामिल करके पा सकते हैं।

कितने दिन में तैयार होती है लोबिया की फसल

लोबिया एक गर्म और आर्द्र जलवायु वाली फसल है। लोबिया की खेती मैदानी क्षेत्रों में फरवारी से मार्च व जून से जुलाई में की जाती है। लोबिया की खेती खरीफ की फसल के साथ भी की जा सकती है। वैसे तो लोबिया पूरे भारत में उगाई जाने वाली वार्षिक फसल है। इसकी फसल बुवाई के बाद 45 से 50 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। और इससे प्रति हेक्टेयर लगभग 70 से 75 क्विंटल पैदावार मिल जाती है।

किसानों को लोबिया खेती का लाभ

लोबिया की खेती दलहन फसल के रूप में की जाती है। किसान लोबिया की खेती हरी खाद, पशुओं के चारे एवं सब्जी के लिए करते है। इसकी कच्ची फलियों की तुड़ाई कर किसान स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। इन कच्ची फलियों को सब्जी के रूप में खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। किसान को लोबिया की फसल से अपने पशुओं के लिए उत्तम पौष्टिक चारा भी प्राप्त हो जाता है। किसान भाई इसके पौधों को पकने से पहले खेत में जोतकर इससे हरी खाद भी तैयार कर सकतें है । भारत में लोबिया की खेती मुख्य रूप से तमिलनाडु,

मध्य प्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, केरल और उत्तर प्रदेश में की जाती है।

लोबिया की खेती कब की जाती है?

लोबिया की ग्रीष्मकालीन की खेती के लिए फरवरी से मार्च में एवं बरसाती फसल के लिए जून–जुलाई में बुआई की जानी चाहिए। क्योंकि लोबिया का पौधा समशीतोष्ण जलवायु का होता है। इसके पौधों का विकास शुष्क मौसम में उचित रूप से होता है। इसके पौधे को विकास करने के लिए अधिक बारिश की जरूरत नही होती है। इसके पौधे भूमि में नमी बनाकर रखते हैं। इसके पौधे लता और झाड़ीदार दोनों रूप में पाए जाते हैं।

लोबिया की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

लोबिया की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु की जरूरत होती है। लोबिया की खेती करने के लिए गर्म व आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है । लेकिन अधिक तेज गर्मी भी इसके पौधों के विकास और पैदावार को प्रभावित करती है। ज्यादा कम तापमान होने पर इसकी फसल बर्बाद हो सकती है, इसलिए लोबिया की फसल को अधिक ठंड से बचाना चाहिए लोबिया की खेती के लिए शुरुआत में बीजों को अंकुरित होने के लिए 24–27 डिग्री के बीच के तापमान की जरुरत होती है अंकुरित होने के बाद इसके पौधे 35 डिग्री तापमान पर भी आसानी से विकास कर लेते है। सामान्य तापमान पर इसके पौधे अच्छे से विकास करते हैं। कुल मिलाकर कहा जाये तो इसके पौधों को उचित विकास के लिए शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती हैं।

लोबिया की बुवाई के उपयुक्त समय

इसकी बुवाई के बारे में बात करें, तो बरसात के मौसम में जून महीने के अंत तक इसकी बुवाई की जाती है। वहीं इसे फरवरी से लेकर मार्च तक बोया जाता है।

लोबिया की बुवाई करने के लिए बीज की मात्र

लोबिया की बुवाई करते वक्त यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी मात्रा अधिक न हो। इसकी बुवाई के लिए सामान्यतः 12–20 कि.ग्रा. बीज/हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। इसकी बेल वाली प्रजाति के लिए बीज की मात्रा थोड़ी कम लगती है और मौसम के हिसाब से बीज की मात्रा का निर्धारण किया जाना चाहिए।

लोबिया फसल की खेती के लिए उपयुक्त मिट्टी

लोबिया की फसल के लिए लगभग सभी प्रकार की मिट्टी को उपयुक्त माना गया है। इसे सभी प्रकार की मिट्टी में अच्छे प्रबंधन के साथ उगाई जा सकती हैं। लेकिन लोबिया की फसल के लिए मटियार या रेतीली दोमट मिट्टी को उपयुक्त माना है। फिर भी कई क्षेत्रों में इसे लाल, काली और लैटराइटी मिट्टी में भी उगाया जाता है। लोबिया की अच्छी फसल के लिए कार्बनिक पदार्थो से युक्त उपजाऊ मिट्टी को इसके लिए विशेष रूप से उपयुक्त होती है। इसकी खेती में उचित जल निकासी वाली भूमि की जरूरत होती है। अत्यधिक लवणीय क्षारीय मृदा इसकी खेती के लिए सही नहीं है। इसकी खेती के लिए भूमि का सामान्य पीएच मान 6 से 8 बीच उदासीन होना चाहिए।

लोबिया की बुवाई करने का तरीका

लोबिया की बुवाई करते वक्त यह ध्यान देना बड़ा जरूरी होता है कि इसके बीज के बीच की दूरी सही हो, ताकि जब इसका पौधा उगे, तो ठीक तरीके से विकास कर सके. दरअसल, लोबिया की बुवाई के समय उसकी किस्म के हिसाब से दूरी रखी जाती है जैसे– झाड़ीदार किस्मों के बीज के लिए एक लाइन से दूसरी लाइन की दूरी 45–60 सेमी होनी चाहिए. बीज से बीज

की दूरी 10 सेमी होनी चाहिए। वहीं इसकी बेलदार किस्मों के लिए लाइन से लाइन की दूरी80–90 सेमी रखना उचित होता है।

लोबिया की उन्नत किस्में

पूसा कोमल– लोबिया की यह किस्म बैक्टीरियल ब्लाईट प्रतिरोधी है। इस किस्म की बुवाई बसंत, ग्रीष्म और बारिश, तीनों मौसम में आसानी से की जा सकती है। इसकी फलियों का रंग हल्का हरा होता है। यह मोटा गुदेदार होता है, जो कि 20 से 22 सेमी लम्बा होता है। अगर किसान इस किस्म की बुवाई करता है, तो इससे प्रति हेक्टेयर 100 से 120 क्विंटल पैदावार मिल जाती है। जैसे– सी– 152, पूसा फाल्गुनी, अम्बा (वी– 16), स्वर्णा (वी– 38), जी सी– 3, पूसा सम्पदा (वी– 585) और श्रेष्ठा (वी– 37) आदि प्रमुख हैं.

- **पंत लोबिया – 4** लोबिया की इस किस्म के पौधे लगभग डेढ़ फीट के आसपास पाए जाते हैं। इस किस्म के पौधे बीज रोपाई के लगभग 60 से 65 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इस किस्म की खेती अगेती फसल के रूप में की जाती है। इस किस्म की फलियों की लम्बाई आधा फिट के आसपास पाई जाती है। जिसके दानों का रंग सफेद दिखाई देता है। जिनका प्रति हेक्टेयर उत्पादन 15 से 20 किवंटल के आसपास पाया जाता है।
- **लोबिया 263** – लोबिया की इस किस्म के पौधे खरीफ और रबी दोनों मौसम में उगाये जा सकते हैं। जिनकी खेती अगेती फसल के रूप में की जाती है। इस किस्म के पौधे बीज रोपाई के लगभग 40 से 50 दिन में पहली हरी फली की तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। जिनका प्रति हेक्टेयर उत्पादन 125 किवंटल के आसपास पाया जाता है। इस किस्म के पौधों में विषाणु जनित रोग काफी कम पाए जाते हैं।
- **अर्का गरिमा** – यह किस्म खम्भा प्रकार की किस्म कहलाती है, जिसकी ऊंचाई 2 से 3 मी की होती है। इस किस्म को बारिश और बसंत ऋतु में आसानी से बो सकते हैं। रोपाई के लगभग 40 से 45 दिनों पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म से 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर के आसपास उत्पादन मिलता है।
- **पूसा बरसाती** – लोबिया की इस किस्म को बारिश के मौसम में ज्यादा लगाया जाता है। इसकी फलियों का रंग हल्का हरा होता है, जो कि 26 से 28 सेमी लंबी होती है। खास बात है कि यह किस्म लगभग 45 से 50 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इससे प्रति हेक्टेयर लगभग 85 से 100 क्विंटल पैदावार मिल जाती है।
- **पूसा ऋतुराज** – लोबिया की यह किस्म प्रकाश एवं तापक्रम के प्रति अति संवेदनशील व फलिया 20 से 25 सेमी. लम्बी होती है एवं हरी फलियों की उपज लगभग 75 से 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

बुवाई से पहले बीज उपचार

अच्छी पैदावार के लिए बीजों का उपचार करके ही बोना चाहिए। बीजों को उपचारित कर के बोने से लगभग 95 प्रतिशत बीजों का अंकुरण उचित रूप से होता है। साथ फसल में होने वालें रोगों की संभवना कम हो जाती है। लोबिया के बीजों को बुवाई से पूर्व 2.5 ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर लोबिया बीजो को विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से शोधित करें।

लोबिया में दिए जाने वाली खाद की मात्रा

किसी भी चीज की खेती करने के लिए खाद बड़ी जरुरी होती है। ऐसे ही लोबिया की खेती करने के लिए खाद जरुरी है। लोबिया की फसल उगने से कुछ इस प्रकार

से खाद डालनी चाहिए। एक महीने पहले खेत में 20–25 टन गोबर या कम्पोस्ट डालें, 20 किग्रा नाइट्रोजन, फास्फोरस 60 कि.ग्रा. तथा पोटाश 50 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत में जुलाई का अंत में ही डाल दें। वहीं, नाइट्रोजन की 20 कि.ग्रा. की मात्रा फसल में फूल आने के समय देनी चाहिए।

लोबिया की सिंचाई करने का समय

लोबिया की फसल को खरीफ के सीजन में पानी ज्यादा जरुरत नहीं होती है, इसलिए खरीफ के सीजन में उतना ही पानी देना चाहिए, जिससे मिट्टी में नामी बनी रहे। वहीं गर्मी की फसल की बात करें, तो आमतौर पर किसी भी फसल में पानी की ज्यादा जरूरत होती है। अगर लोबिया की बात करें, तो इसमें 5 से 6 पानी की जरूरत होती है।

कैसे करें लोबिया में कीट प्रबंधन

- **रोमिल सूंडी कीट** – यह लोबिया का प्रमुख कीट है। यह फसल को भारी नुकसान पहुंचाता है अगर फसल में इस कीट का प्रकोप दिखे तो 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 2 प्रतिशत मिथाइल पेराथियानद पाउडर का छिडकाव करें।
- **तेला और काला चेपा** – लोबिया फसल पर यदि तेला और काले चेपे का हमला दिखे तो मैलाथियॉन 50 ई सी 200 मि. ली. को 80–100 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ में डालें।
- **लीफ होपर, जैसिड, एफिड** – ये कीट पौधे के रस को चूसकर उसे पीला व कमजोर कर देते है। अगर इस कीट का प्रकोप फसल में दिखे तो इसकी रोकथाम के लिए डाईमेथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटान 30 ई.सी. की 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

• रोग नियंत्रण कैसे करें

- **बीज गलन और पौधों का नष्ट होना** – यह बीमारी बीज से पैदा होने वाले माइक्रोफलोरा के कारण फैलती है। प्रभावित बीज सिकुड़ जाते हैं और बेरंग हो जाते हैं। प्रभावित बीज अंकुरण होने से पहले ही मर जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए बुवाई से पहले थीरम दवा 2.5 ग्राम या बवास्टिन 50 डब्ल्यू पी 2 ग्राम से प्रति किलो बीजों का उपचार करें।
- **जीवाणु झुलसा** – रोग के लक्षण व प्रकोप प्रारंभिक दशा में बड़े पैमाने पर नवजात पौधों में देखनें को मिलता हैं। इसकी रोकथाम के लिए 0.2 प्रतिशत का ब्लाईटाक्स का छिडकाव करें।
- **लोबिया मोजैक** – यह बीमारी सफेद मक्खी द्वारा संचारित होती है। इससे पत्तियों का आकार विकृत हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिए 0.1 प्रतिशत मेटासिस्टॉक्स या डाइमेथोएट का छिडकाव 10 दिन के अन्तराल पर करें।

असल में लोबिया का कई प्रकार से किया जाता है, इसलिए इसकी कटाई भी अलग–अलग समय पर होती है, जोकि कुछ इस प्रकार है:

- लोबिया की हरी फलियों का अगर आप उपयोग करना चाहते हैं, तो इसकी फलियों को 45 से 90 दे बाद तोड़ लेना चाहिए.
- अगर आपने लोबिया की चारे वाली फलियों की फसल की है, तो इसकी फलियों को समान्यतः 40 से 45 दिन में तोड़ लेना चाहिए।
- वहीं अगर आप इसके दाने को प्राप्त करना चाहते हैं, तो उसके लिए आपको 90 से 125 दिन के बाद ही फलियों को पूर्ण रूप से पकने पर ही तोड़ना चाहिए।